इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ३७+५ (९०५)

ग्रंथ नाम ज्ञानेश्वरी कोश.

विषय म० कोश.

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

॥ श्रीज्ञानेश्वरिपर्यायशब्दपरिभाषादीपन अध्याय ॥ ॥ प्रारंभ ॥
शब्दब्रह्म ॥ वेद ॥ वर्णवपु ॥ अकारादिक ॥ ३ ॥ देव ॥ स्वरूप ॥ ४ ॥
खेचरी ॥ कोदंड ॥ ५ ॥ अबंरा ॥ वस्त्र ॥ सपुर ॥ बारीक ॥ ६ ॥ सड
का ॥ अमना ॥ ८ ॥ विसंवादे ॥ मज्ञानरे ॥ १० ॥ खंडित ॥ अ
र्धी ॥ १२ ॥ सुविमक ॥ निर्मळ ॥ १४ ॥ उन्मेख ॥ ज्ञान ॥ १५ ॥ नि
कुंभ ॥ गंडस्थळ ॥ १६ ॥ इभ ॥ हस्ती ॥ १७ ॥ मकरंद ॥ सुवा
स ॥ १८ ॥ आदीबीज ॥ ॐकार ॥ २० ॥ वगाहीनी ॥ स्नान ॥
॥ २१ ॥ अभीवंदीला ॥ नमस्कारीला ॥ अभीलासीन ॥ प्रा
र्थीत ॥ २२ ॥ उद्यान ॥ बाग ॥ २८ ॥ वरीष्ठ ॥ विशाळ ॥ ३० ॥

Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥२॥ आविष्करोनी ॥ प्रवेशोनि ॥ ३२ ॥ गरवतीचा ॥ थोरपणाचा ॥ ३३ ॥
शाढ्यश्री ॥ शाढ्यशोभा ॥ शांत सात्वीक ॥ उत्तम शाख ॥ ३४ ॥ बी
क ॥ आधीक ॥ ३८ ॥ अपाडे ॥ आधीक्य ॥ ४३ ॥ घनिभूत ॥ ॥२॥
खोट जाले ॥ ४४ ॥ आवडते ॥ पाही जैसे ॥ ४५ ॥ सानीव ॥
व्हाहानपन ॥ ४६ ॥ निवडले ॥ निघाले ॥ नीरवधी ॥ आ
वधनाही ॥ ५० ॥ कडसीले ॥ विचारिले ॥ ५२ ॥ पारंगती ॥
पारपावले ॥ ५३ ॥ तळेगे ॥ थाकूट ॥ ५८ ॥ अनुराग ॥ प्री
ती ॥ ६० ॥ आथिला ॥ भाग्याचा ॥ ६१ ॥ कवळु ॥ बोलु ॥ व्हा
हे ॥ जाणतो ॥ ६६ ॥ धिंवसा ॥ संकल्प ॥ उपनला ॥ उपज

न्ना॥ आथी॥ आहे॥६७॥ आपाड॥ आगाध॥६८॥ विवरी॥
वीचारी॥ चमत्कारोनी॥ संतोष होउनि॥७०॥ सुरावे॥
धरावे॥७४॥ सधरू॥ सामर्थ॥७५॥ आथी॥ आहे॥ भा
रती॥ सरस्वती॥७६॥ दत्तात्रय॥ ब्राह्मणाची पुत्तली॥७७॥
धर्मात्मय॥ वर॥ व्याजे॥ [illegible]॥७८॥ साहुकत्वा॥ प्रदीस
जाला॥ उथवला॥ उत्सवला॥८०॥ परिकर॥ प्रखर॥
अवगमले॥ भासले॥८१॥ नानेप्रकारे॥ घंटते॥ समुद्रा
यात्रे॥८२॥ कुरया॥ चतुर॥ पारखरीला॥ सज्जीला॥८३॥
सुभटु॥ योद्धा॥८४॥ विक्रांत॥ पराक्रमी॥८५॥ आडदरू

(3)

॥१२॥ धाकं ॥१०७॥ पारंगत ॥ निपुण ॥८॥ अप्रतीमल्ल ॥ सर्वांवरि ॥१२॥
ष्ठ ॥ अराईत ॥ अनुसरले ॥११०॥ सुनटासी ॥ योध्यासी ॥
॥११२॥ पाडे ॥ विशेषे ॥११३॥ कुळकर्नी ॥ कुराळता ॥ केले ॥
युध्य ॥ कीर्ती ॥ येश ॥११५॥ प्रभासीले ॥ रचीले ॥ थेसुले ॥
थोडे ॥११६॥ दुवाडपण ॥११७॥ सामर्थ्य ॥ विरजा ॥ साह्य ॥११८॥
बोरचीलेनी पाडे ॥ आनन्या सैन्याहुन थोडे ॥११९॥ बेथु ॥
हांडगा ॥१२०॥ सरिसे ॥ सिद्ध ॥१२१॥ अरनि ॥ रक्षणी ॥ वर
गनि ॥ वारणि ॥१२२॥ साजुच ॥ साजीरा ॥१२४॥ उपजत ॥
वाढत ॥१२६॥ तुळगा ॥ प्रतिध्वनि ॥ थावे ॥ बके ॥१२७॥ धाक

जासी ॥ बळी ष्टासी ॥ २७ ॥ भोगळे ॥ ढोलें ॥ ३२ ॥ विसरलें ॥ आवेश्च
लें ॥ ३३ ॥ काचपां ॥ अधिर ॥ आंग ने घे ॥ पुढें नये ॥ ३४ ॥ कोंतलें ॥
पोडे ॥ ३८ ॥ अवळिलें ॥ सहज ॥ ४३ ॥ हिर ॥ गंभिर ॥ ४४ ॥
नूर बंबाळ ॥ बाघ समुह ॥ ४५ ॥ विसरलें ॥ आवेशलें ॥ ४८ ॥
अंतकु ॥ येम ॥ गजबजीलें दाके ॥ भीउन राहीलें ॥ ५० ॥ अ
सुडित ॥ निघोपाहत ॥ ५६ ॥ मोकळवाट ॥ स्थानभ्रष्टता ॥ ५७ ॥
थोकलें ॥ दिसेना ॥ ५८ ॥ घेतां आंत ॥ समुदायांत ॥ ६२ ॥ हिंये ॥
हृदये ॥ घालिति ॥ बैसविती ॥ ६३ ॥ दुणावतो नि ॥ पहिल्यापेक्षा ॥
उचललें ॥ उठावलें ॥ दंडी ॥ दाढी ॥ क्षोभलें ॥ उपमकीळे ॥ ६५ ॥

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(५)

निरंतर ॥ अखंड ॥ ६६ ॥ पेंढावा ॥ ढकलावा ॥ ६७ ॥ वारिंवा ॥ पुरुषार्थें ॥ ७० ॥
॥ ३ ॥ सो ॥ सुचना ॥ ७१ ॥ निगालि ॥ पळाली ॥ ७५ ॥ आथि ॥ असति ॥ ७६ ॥ ॥ ३ ॥
पाडेवील ॥ योग्यनेविला ॥ १८७ ॥ सीद्धि ॥ मोक्ष ॥ ८८ ॥ रजनापासोनि ॥
वज्राहुनि ॥ ८९ ॥ आपा ॥ आकारास ॥ २०३ ॥ आरोपुनि ॥ येडुनि ॥ २० ॥
जन कलीन ॥ निरुपद्रवा ॥ २६ ॥ वसोद ॥ वसीस्थान ॥ २८ ॥ को ॥
कोटे ॥ २२ ॥ सकोनीयेसी ॥ ठोनोसी ॥ २३२ ॥ क्रिडा ॥ खोटे ॥ ३३ ॥
हिंये ॥ हृदये ॥ ३४ ॥ अंधकुप ॥ निर्जलकूप ॥ २३ ॥ वोसंडोनि ॥
परतोनि ॥ २४० ॥ पारुषनी ॥ नराहति ॥ ४४ ॥ उजूचि ॥ निटजी ॥ ४५ ॥
टाकति ॥ राहाति ॥ ४५ ॥ उपडति ॥ उडती ॥ २५० ॥ पारुषे ॥ राहे ॥ २५ ॥
वानिवसे ॥ माजिघरि ॥ घाली ॥ टाकी ॥ ५८ ॥ उगड ॥ उकला ॥ सेसेन ॥

(5A)

पेहडे ॥ ६१ ॥ सुदले ॥ पाडीले ॥ २७ ॥ थोकुले ॥ थोडे ॥ ६४ ॥ नयापासोनि ॥
साहोनि ॥ ६५ ॥ निके ॥ बरे ॥ ६६ ॥ उपहत ॥ वेहिला ॥ २७० ॥ ५ ॥
॥ इती श्रीज्ञानेश्वरीटीपनराहुपरीभाषाप्रथमोध्याय: ॥ १ ॥ ५ ॥

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(5)

॥१॥ अथ द्वितीयोध्याय प्रारंभः श्री उपनले ॥ उपजले ॥२॥ विरमले ॥ विरा ॥१२॥
ले ॥३॥ ठावो ॥ आश्रय ॥८॥ नाटेपणाच्या ॥ स्नेहरस्याच्या ॥९॥ फेडिले ॥ स्फ
टिले ॥१०॥ पाडेसाम्ये ॥ थोकडे ॥ थोडे ॥ पौरुषत्व ॥ स्नेहरस ॥१९॥
अप[illegible]स्नेहरा ॥ नाशाकव्या ॥२०॥ ग्रोच्यतां ॥ सिजि ॥२१॥ नुपकरे ॥
उपकारेना ॥२३॥ व्याज ॥ कार्य ॥ आथि ॥ आहे ॥२५॥ ठीलेपणा ॥
आधिरत्व ॥२८॥ प्रमाद ॥ अन्याय ॥ लिंगभेद ॥ चिन्हनाश ॥३०॥
विरा ॥ विरहु ॥३५॥ आहच ॥ सामान्य ॥३८॥ विकरविले ॥ चकविले ॥४४॥
निरवधि ॥ निसीम ॥४३॥ माने ॥ प्रकारे ॥ दुर्भर ॥ दुर्घट ॥ सधर ॥
अधिक ॥ वर ॥ परतें ॥ भलि ॥ वरी ॥४६॥ नविनि ॥ शिणि ॥ पाजा
प्या ॥ वावरोनि ॥ प्ररोनि ॥ मिवसावे ॥ साधावे ॥४८॥ नये ॥ न माने ॥

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai joint project of the

(5A)

उपपत्ति ॥ युक्ति ॥ ५० ॥ विवरो नि ॥ विचारो नि ॥ निके ॥ उत्तम ॥ ५२ ॥
विरत ॥ विरक्त ॥ व्याजे ॥ मिसे ॥ ५३ ॥ तिमिरावरोधे ॥ नेत्ररोगे ॥
पाणी च ॥ सन्निध ॥ ५५ ॥ अपा ॥ [illegible]स ॥ ६५ ॥ आहावलि ॥ हुरप
ळढि ॥ तें चढि ॥ सिंपलि ॥ ६६ ॥ उज्जीवन ॥ भोग साधन ॥
कारस्य ॥ ६९ पा ॥ ६८ ॥ कौव्हारि ॥ कमळ ॥ भोजे चना ॥ उगरेचना ॥ ७१ ॥
प्रोढि ॥ श्रेष्ठ से ॥ फेडि ॥ उन्तारि ॥ ७२ ॥ वरा वळा ॥ पेटला ॥ ७३ ॥
सुनिळ ॥ मेघश्याम ॥ ७७ ॥ उनैषा ॥ चि ॥ दानाचि ॥ ७४ ॥ नाव
वावे ॥ नबोळवावे ॥ ८२ ॥ येक हेळा ॥ येक वार ॥ ८३ ॥ निरवधि ॥
उन्नत ॥ ८६ ॥ थोकले ॥ उसे ॥ अधि आहे ॥ ८८ ॥ माझा दिव्यि ॥ न
व्योचि ॥ ९१ ॥ सैरा ॥ भलतिकडे ॥ ९३ ॥ सोचू ॥ श्रमु ॥ ९४ ॥ ओच्या

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

॥२॥ वेश्रमावे १००॥ नरोन्यति॥ नश्रमति॥ २०॥ वट्रों॥ पोगे॥ के॥ कोठे॥ हि॥
टलें॥ राहिलें॥ सपाटलें॥ स्थिर जालें॥ २७॥ अक्रावितिं॥ बुडवितिं॥ २८॥ ॥२॥
राहिलीचें॥ म्हण॥ अळ॥ २९॥ नागवेचि॥ नस्पनोहे॥ ३४॥ किडाळ
हिला॥ चोखाळलोनें॥ ३८॥ आयसी॥ रात्रिंनें॥ कडसनि॥
गुसळलीं॥ निर्वालि॥ ओंनी॥ ३५॥ निरसलें॥ निराकारलें॥ ३९॥
अपडे॥ बाटे॥ १३०॥ हाक्रियं॥ हारीतव्या॥ ४०॥ अंतलें॥ जा
लें॥ अपैसे॥ सहजें॥ ४२॥ नारोपि॥ नांगिकारि॥ ४३ नाकुवे॥ न
बुडे॥ नसंभवे॥ नजळे॥ नप्रभवे॥ स्फुनहे॥ ४४॥ आपुनोहे॥
प्रासनोहे॥ ४५॥ अविष्टरत॥ अविकार॥ ४७॥ अनवंत॥ नासीवं
त॥ ५२॥ अनस्यूत॥ अखंड॥ ५३॥ सरसींच॥ सांगानेंची॥ अवस

(6A)

सुरले॥ केवल॥१८॥

रि॥ समई॥ ठाकलिना॥ राता लिना॥॥४५॥ छोचावे॥ थमावे॥४६॥
अनेहुसरि॥६१॥ पठियासे॥ दिसे॥६७॥ अविरन्नाणभ्यल॥६९॥ निसु
निगला उन्नि॥७१॥ उपरपति॥ विरकि॥७३॥ निवरणंधें अरयंल॥
॥७३॥ किजाव॥ वोहि॥७९॥ अंतरंतु॥ नासिवंल॥४२॥ नजिकिजे॥
॥ अउरवकिजे॥८७॥ पति[illegible]के॥[illegible]हादे॥ आलिचेनि॥ प्रीच्यौलिच्या॥
पउिमदे अधिल्ये॥९३॥ अव[illegible]॥ दृष्टाल॥९६॥ पाउिके॥ गमा
विले॥९९॥ अभिषाप॥ विं[illegible]॥ वचोत॥ हुडकिन॥॥८८॥ उ
पहनी॥ परानवा॥ ९९॥ च्योमेरि॥ चहुकडोनि॥ अभिभवीजे॥
परानविजे॥२०७॥ वरपडा॥ वस्य॥१॥ किर॥ खरेचि॥३॥ वि
पाये॥ केहाचि वा॥५॥ अनकलिना॥ सहज॥१०॥ सुभटायोद्ध॥

(४)

॥३॥ वोंट ॥ पक्षिष्ठ ॥१३॥ कूटि ॥ निंदा ॥१४॥ हिपे ॥ हृदया ॥ नाठे पळे ॥ ॥३॥
धैर्य ॥१५॥ अनकळीत ॥ निरुपद्रव ॥२०॥ हेतुक पळे ॥ आहे पळे ॥
॥२५॥ मुकुलित ॥ संक्षिप्त ॥३०॥ अनुचित ॥ निच्छपे ॥३२॥
न निटीसी जे ॥ नईपी जे ॥२०४॥ चोखाळ न ॥ उजळन ॥ आ
पळावा निरव धी ॥ अवडीता कीपने ॥३५॥ वज्रो ॥ योगे ॥३६॥
थे कुटि ॥ पाकुटि ॥३८॥ विचार स्तुति ॥ विवेकवंति ॥३९॥
नाहले ॥ पावले ॥४२॥ विकरति ॥ चळति ॥४३॥ अभिभूत ॥
वर्जप ॥४८॥ टांपवणी ॥ पाकळी ॥ रससोय ॥ पाकनिष्पत्ति ॥
निष्क्रि ॥ चो ॥ लि ॥ धाडिति ॥ रवडिति ॥५४॥ अयन व्यापि
ना ॥५६॥ सरती ॥ आवतल्या ॥५८॥ चेपे ॥ घावे ॥६०॥ विवरि ॥

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(7A)

ति॥ विचारिती॥ ६९॥ टेविया॥ राहिल्यां॥ सगुण॥ पूर्ण॥ ७०॥ सरिसे॥
सारिखे॥ ७२॥ कर्मरोष॥ कर्मसाध्य॥ ७५॥ पारंगत॥ मास्वसिद्ध॥ ७५॥
निरामय॥ निर्विघ्न॥ भरित॥ पूर्ण॥ ७७॥ निचाड॥ अनिष्ट॥ अपे
से॥ सहन॥ ८१॥ पारखेळ॥ राहेळ॥ ८२॥ उमेष॥ संतोष॥ ८५॥
भुजे॥ भोगि॥ ८८॥ आर्ती॥ इष्टा॥ ९४ अडपे जेना॥ अडेचेना॥ ९४॥
अनवधिन्न॥ व्यापक॥ ९८॥ नाभि नवे पदा भवेना॥ ९९॥ उवाईला॥
उत्साहे॥ ३०१॥ अपेति॥ स्वार्थ॥ ३॥ रसहट॥ रसनिग्रहे॥ द्रि
आया॥ आकारा॥ ५॥ थोटावेळे॥ थकले॥ सये॥ राहे॥ ९॥ सकवेना॥
भुलेना॥ ३१५॥ अपजे॥ होय॥ २०॥ उपनला॥ उपजला॥ टेला॥ उभा॥ २२॥
अपूर्वि जे॥ बुडविजे॥ २४॥ भवे॥ भेंचा॥ २५॥ अवघडे॥ वेडावे॥ २६॥

"Joint property of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(8)

॥४॥

विपायें ॥ कहीं चीन् ॥ येसलें ॥ यवें ठें ॥ २८ ॥ निर्भिन्न ॥ अभिन्न ॥
॥ ३३ ॥ अडदर ॥ काक ॥ ३८ ॥ कडसणी ॥ विचारणा ॥ ४१ ॥ आप ॥ प्रा
स ॥ ४३ ॥ हुटावणी ॥ भोवरा ॥ ३४८ ॥ पाहलें ॥ उजेडलें ॥ चेईलें ॥ ॥४॥
आग्मन ॥ ५४ ॥ इंधन ॥ किंचित ॥ ५५ ॥ अधृति ॥ अथीये ॥ ५८ ॥
नागर ॥ नांदने ॥ पावबें ॥ तुष्ठ ॥ पाठवलें ॥ मांडवें ॥ ६३ ॥ उपप
त्ति ॥ युक्तिने ॥ ७० ॥ पातल्दें ॥ राहिलें ॥ ७१ ॥ उवाईला ॥
सुखावला ॥ ७२ ॥ नागर ॥ सुंदर ॥ ८७ ॥ ॥ इति श्री ज्ञाने
श्वरी पर्याय पर्याय नचरा कृप ति भाषा द्वितियो ध्याय: ॥ २ ॥ ५ ॥

॥ आध्या ॥ ३ ॥ प्रारंभ ॥ १ ॥

॥ सूमंग ॥ घालिता ॥ ३ ॥ येइसणी ॥ येव ठि ॥ ५ ॥ सुपे ॥ घालुन ॥ ८ ॥ सुई
जे ॥ घालीजे ॥ अहाटा ॥ धाटा ॥ ९ ॥ गांवाई ॥ प्रता रणा ॥ अनुसरलिया ॥
सार णा आ ला ॥ १९ ॥ घोटं गावे ॥ विश्वासावे ॥ १२ ॥ फिर ॥ निश्चये ॥ १४ ॥
धा निने ॥ संक्षीपे ॥ आव ग मीता ॥ विचारीता ॥ १६ ॥ म हा टा ॥ स्पष्ट ॥ १७ ॥
मा गि ल ॥ धा व ता आ ला ॥ २४ ॥ सवेसा ॥ स्वइंधा ॥ पाह खा ॥ जा ला ॥
॥ २६ ॥ अनवसर ॥ भीड ॥ २७ ॥ सोय ॥ ज्ञानी ॥ ३६ ॥ निशिलता ॥
निपुण ॥ वेळे ॥ काळे ॥ ३७ ॥ सूनि ॥ याविण ॥ ४५ ॥ निष्कर्म ॥ क
मे हिन ॥ ४६ ॥ प्रसरण ॥ कार्य ॥ ४७ ॥ नैष्कर्म ॥ बंसल ॥ ५० ॥ आपा दिले ॥
आरंभि ले ॥ ५१ ॥ बाया चिसे रा ॥ पर्धची उमोप ॥ ५२ ॥ टेले ॥ राहिले ॥ ५५ ॥
कुडे ॥ पुरते ॥ ६५ ॥ सा कुले ना ॥ मोहो ना ॥ ७० ॥ न घेपे ॥ न जिके ॥ न सिंपे ॥

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com